एक चक्र है जन्म-मरण : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 28 सितम्बर।

जन्म-मरण का चक्र है। वह निरंतर चलता रहता है। उससे कर्मों से आबद्ध आत्मा कभी मुक्त नहीं हो सकती। इस चक्र में असंख्य लोग जन्म लेते हैं और मरते हैं। जो जन्म और मरण के बीच की अवधि होती है वह महत्त्वपूर्ण होती है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने तेरापंथ धर्मसंघ की दिवंगत साध्वी मनोहरां की स्मृति सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

उल्लेखनीय है कि साध्वी मनोहरां आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशन से उदासर चातुर्मास कर रही थी वहां पर दो दिन पूर्व दिवंगत हो गई। उन्होंने कहा कि साध्वी मनोहरां शासन के प्रति समर्पित साध्वी थी। उसमें अनेक विशेषताएं थी। शासन में जो दीक्षा लेता है वह सेवा, साधना करता है और समाधिमरण को प्राप्त कर लेता है। जो समाधिमरण को प्राप्त कर लेता है, जो समाधि को प्राप्त करता है उसके प्रति शोक नहीं होता। तेरापंथ धर्मसंघ में शोक और हर्ष के बीच मध्यस्त भावना का प्रयोग किया जाता है। आचार्यवर ने कहा कि संघ का सदस्य जाता है तो एक रिक्तता की अनुभूति होती है, क्योंकि सब धर्मसंघ के कार्यों में लगे रहते हैं, प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि वह धर्मसंघ की प्रभावना में अपना योगदान दे।

युवाचार्य महाश्रमण ने साध्वी मनोहरां के जीवनवृत्त पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उदासर से संघ रूप में श्रद्धालु उपस्थित हुए। उदासर की कन्यामण्डल ने गीत के माध्यम से भावनाएं प्रस्तुत की। श्रावक चम्पालाल ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

पूर्व जन्म अनुभूति शिविर 1 अक्टूबर से

तुलसी अध्यात्म नीडम जैन विश्व भारती के द्वारा प्रेक्षाध्यान के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं मुनि किशनलाल के निर्देशन में पूर्वजन्म अनुभूति शिविर का आयोजन 1 अक्टूबर से 5 अक्टूबर तक आयोजित किया जायेगा। इस शिविर में प्रेक्षाध्यान के विशेष प्रयोगों से शिविरार्थियों को अपने पूर्व जन्म की यात्रा कराई जायेगी।

P. T. O. 27